# डार्विन का विकासवाद, परमात्मा का स्वर्ग

ब्रह्माकुमार राम लखन,

चार्ल्स डार्विन ने अमीबा से आदमी बनने की लम्बी दलीले दी हैं। अमेरिका में ये ही बातें कानूनी बहस का मुख्य कारण बनी हैं। बन्दर से आदमी बनने का हजारों सालों में एक भी उदाहरण न पाकर ये बातें अदालतों के कटघरों में हैं। सृष्टि विकास के रहस्यों पर नये सिरे से विचार करने की अति आवश्यकता समझी जा रही है। सृष्टि की रहस्यमय संरचना को ऐसे ही सरल तरीके से नहीं समझा जा सकता है। 'इन्टेलीजेंस डिजाइन' सिद्धान्त वाले डार्विन के विचारों को सिद्धान्त की बजाय विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करवाना चाह रहे हैं। अमेरिका के पेनिसिल्वानियाँ, काउन्टी, जार्जिया आदि कई प्रान्त ऐसे भौतिकीय विचारों के साथ अलौकिक तत्थों को भी जोड़ने पर जोर दे रहे हैं। लोग डार्विन की बातों का वैदिक विकल्प चाह रहे हैं। ''अमेरिकी बौद्धिक जगत की वैदिक सृष्टि'' ताजा विषय बन गयी है। वेद—वेदान्त, गीता—रामायण खगोले जा रहे हैं। सृष्टि का प्रारम्भ और आज की विकृतियाँ विश्व की मूल समस्यायें हैं।

इस सृष्टि के पहले आखिर था क्या ? यदि समय चक्रीय रूप में घूमता ही रहता तो गुजरे समय की तरह आने वाला समय क्यों नहीं दिखाई देता ? विश्व ब्यापी ब्रह्माकुमारी संस्थान में सृष्टि चक्र के हुबहू परिवर्तन की जानकारी दी जाती है। गर्मी—बरसात, जाड़ा के बाद पुनः गर्मी आती है। दिन के बाद रात और फिर दिन आ जाता है। आज का दिन जितने घण्टा मिनट—सेकेण्ड का होगा साल भर के चक्र के बाद वही दिन उतने ही घण्टे—मिनट—सेकेण्ड का होता है। ये सभी बातें तो साक्षात हमारे सामने हैं परन्तु पाँच हजार साल बाद सृष्टि का सम्पूर्ण इतिहास—भूगोल भी हूबहू बदल जाता है। जैसे हमारे शरीर का संचालन मात्र पाचन संस्थान से ही नहीं होता है। ग्रन्थियों और हारमोन्स के सुचारू कार्य करने पर ही जीवन चलता है। वैसे ही दृश्यमान जगत ही सब कुछ नहीं है। अदृश्य आत्मा के निकलते ही शरीर कौड़ी के काम की नहीं रहती। वैसे ही सृष्टि के संचालन में निराकार परमात्मा का ही प्रमुख योगदान है। साकारी दुनिया का नव निर्माण निराकारी दुनिया से ही होता है। मानवता का सम्पूर्ण विकास परमपिता परमात्मा पर ही निर्भर है। इसी कारण सर्वआत्मायें सुप्रीम गाडफादर के रूप में

उन्हें पुकारती—पूजती व ढूँढ़ती रहती हैं। भारत में तो माता—पिता, बन्धु सखा आदि सभी संबंधों का परमसुख उन्हीं से प्राप्त करने को परम पुरूषार्थ माना जाता है। अर्थात् अदृश्य जगत की अनुभूतियों का महत्व दृश्य जगत से भी ज्यादा हितकारी है। परम लघु आत्मा और परमात्मा के सम्मिलन से ही स्वर्ग का निर्माण होता है।

अमीबा या बन्दर से आदमी नहीं बना है। आज तक कोई भी बन्दर आदमी बनते हुये न देखा गया न सुना गया। अमीबा के बाद मछलियों को मानें तो इतनी मछलियों से कितने बन्दर बन जाते ? इडविन के विग बैग सिद्धान्त के अनुसार १५ अरब वर्ष पहले यहाँ विस्फोट हुआ। उससे पहले सारी ऊर्जा एक सघन विन्दु में केन्द्रित थी। सच में मात्र ५००० वर्ष पहले ही शक्तियों के परमस्रोत का अवतरण हुआ। उनसे ही सृष्टि का नव निर्माण हुआ जो कि हूबहू पुनरावृत्ति के अनुसार फिर से हो रहा है। इडविन कहते परमकण एक दूसरे से दूर नहीं भागे पर हम परम लघु आत्मायें इस सृष्टि रंग मंच को छोड़कर अन्त में अपने मूलवतन चली जाती हैं। तभी तो कहा जाता है ‘‘यह दुनियाँ मुसाफिर खाना है— एक दिन सबको छोड़ के जाना है। यह चिड़िया रैन बसेरा है—आदि।

अभी परमपिता के सिखाये ज्ञान—योग—धारणा—सेवा से जिन्होनें स्वयं में उच्चता भरी वे ही होने ही वाले महाविस्फोटक महाविनाश के बाद भारत भूमि पर अवतरित हो स्वर्गिक दुनियाँ की शुरुआत करते हैं। विज्ञान के अविष्कार तो कुछ सदियों से ही हो रहे है। ऋग्वेद में ऋषि—मुनियों ने भी सृष्टि संरचना के विषय में सवाल उठाये हैं। नई दुनिया के मूल्यों को भगवान अभी हमारे अन्दर भरते हैं। ज्ञानमय जीवन की क्रान्तिकारी देन भारत की ही है। ऋग्वेद के अनुसार देवी—देवताओं से पहले सत् था न असत्। अर्थातपुरूषों में उत्तम बनाने वाला यही पुरूषोत्तम युग था। अभी कल्प के संगम युग पर आदि देव ब्रह्मा और ब्रह्मा वत्सों द्वारा मानवता को मूल्यनिष्ठ बनाने की घोर साधना हुई। ब्रह्मा के ही शुभ संकल्पों के बल पर मनुष्यों में पुनः देवत्व जागृत हुआ। देव सृष्टि धरा पर आये उससे पहले ही परमाणु बमों का महाविस्फोट होगा। सुखों के सागर परम बिन्दु पर जो केन्द्रित रहे, नई सृष्टि के सृजनहार ब्रह्मा के साथ विष्णु वंशीय के रूप से देवी—देवता के रूप में अवतरित होंगे। बाकी आत्मायें

परमधाम की परमशान्ति में निमग्न रहेंगी। वे ही क्रमश: उतरते—२ कल्प के अन्त में फिर जन संख्या विस्फोट करेंगी।

ईशा से कुछ सदी पहले मिस्र , सुमेर, बेबीलोन, यूनान, फिलिस्तीन आदि देशों में भी भारतीय ऋग्वेद की कथायें व धारणायें थीं। सर्वत्र ही देव कथाओं का बाहुल्य था। उनके अनुसार देवी—देवताओं के चार जोड़े अर्थात् अष्ट रत्न आत्मायें ही नई सृष्टि संरचना में मुख्य भूमिकायें निभाती हैं। यूरोपीय अवधारणायें भी मिस्र वालों के समान हैं। कहते है कि ईशा से ३००० साल पहले महा जल प्रलय के समय घोर अज्ञानता के अंधियारे में परम प्रकाशमय परमात्मा अति आकर्षक रूप में दिखे। जल प्रलय से उभरे पर्वत पर देव सृष्टि की शुरुआत हुई। भारत में जल देवता का गायन भी है। ज्ञान को जल भी कहा जाता है। वही ज्ञान कलश धारण कर ब्रह्माकुमारियाँ शिव के सानिध्य से नई सृष्टि का निर्माण कर रही हैं। ऋग्वेद में उन्हें ही वाणी देवी कहा गया है। उसी ज्ञान मुरली से मानव में देवत्व जागृत हो रहा है। सुमेरियन संस्कृति में भी देवी—देव शब्द सर्जक क्षमता का द्योतक है। वही सत् ज्ञान भारत से सारे विश्व में फैल रहा है। अधिष्ठाता परम पुरुष से आदि देव की उत्पत्ति हुई। विराट पुरुष उत्पन्न होते ही एक से दो, दो से चार होने लगे। अर्थात् आदि देव ब्रह्मा ने स्वर्णिम सृष्टि की नींव रखी। उन्हीं से लाखों ब्रह्मावत्स सृजित हुये हैं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com